ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 16 कुल पृष्ठ-8 17 से 23 जनवरी, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 मा.शी.शु.-14

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् आर्यनेता, प्रखर लेखक एवं ओजस्वी वक्ता सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी के सुपुत्र

श्री चक्रकीर्ति सामवेदी का आकस्मिक निधन - पूरे आर्य जगत् में शोक की लहर

आर्य समाज का उदीयमान नक्षत्र अस्त!

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश, लोकायुक्त जस्टिस सज्जन सिंह कोठारी, जस्टिस पानाचन्द जैन, जस्टिस दवे, आर.एस. तोमर एडवोकेट, रामसिंह आर्य, अशोक आर्य आदि ने अर्पित की भावभीनी श्रद्धांजलि

स्वर्गीय चक्रकीर्ति सामवेदी

क्या गजब हो जज़बाय दिल, गर यह अंजाम हो जाये।
मुसाफिर हो राहे मंजिल, और शाम हो जाये।।

किसी शायर के उक्त शब्दों को यदि युवा नेता श्री चक्रकीर्ति सामवेदी के असामयिक निधन से जोड़कर देखा जाये तो ये पंक्तियाँ प्रासंगिक प्रतीत होती हैं। आर्य समाज के विख्यात नेता, विद्वान्, ओजस्वी वक्ता, प्रखर लेखक एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी के सुयोग्य युवा सुपुत्र श्री चक्रकीर्ति सामवेदी का गत दिनों असामयिक निधन हो गया। उनके निधन का समाचार सुनकर सम्पूर्ण आर्य जगत् में शोक की लहर व्याप्त हो गई। क्योंकि श्री चक्रकीर्ति सामवेदी आर्य समाज के कार्यों में प्राणपण से जुड़े हुए थे और किसी को भी यह आभास नहीं था कि वे अचानक आर्य समाज की आशाओं को धूमिल करते हुए हमसे बिछुड़ जायेंगे। श्री चक्रकीर्ति सामवेदी आर्य समाज आदर्श नगर एवं उससे सम्बद्ध समस्त शिक्षण संस्थाओं तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यों का दायित्व बड़ी कुशलता से निभा रहे थे। उनकी कार्यक्षमता, कार्य कुशलता एवं प्रशासनिक योग्यता से इन समस्त संस्थाओं के अधिकारी एवं कर्मचारी अत्यधिक प्रभावित थे। अहर्निश आर्य समाज की उन्नति, संगठन की प्रगति एवं संस्थाओं के विकास एवं व्यवस्था के लिए अथक परिश्रम करने वाले श्री चक्रकीर्ति एक ऊर्जावान युवक थे। विरासत में मिले आर्य समाज के संस्कार उनके रोम–रोम में बसे हुए थे। उनके पिता श्री सत्यव्रत सामवेदी आर्य जगत् के उच्च कोटि के नेता, विद्वान्, लेखक एवं ओजस्वी वक्ता हैं और उनके दादा पं. जयदेव विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी के उन तेजस्वी स्नातकों में से एक थे जिन्हें स्वयं स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सान्निध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला था। पं. जयदेव विद्यालंकार ने सन् 1942 तक महात्मा गांधी जी के साथ कार्य करने के पश्चात् आर्य समाज का झण्डा अपने हाथ में थामा और सुदूर आन्ध्र प्रदेश के वरंगल जिले में उन्होंने अपने प्रवास के दौरान लगभग एक सौ आर्य समाजों की स्थापना

सीकर से सासंद स्वामी सुमेधानन्द जी सामवेदी जी को सान्त्वना देते हुए

अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ 1 का शेष

श्री चक्रकीर्ति सामवेदी का आकस्मिक निधन – पूरे आर्य जगत् में शोक की लहर

करके एक कीर्तिमान स्थापित किया। चक्रकीर्ति के पिता श्री सत्यव्रत सामवेदी ऐसे प्रखर लेखक एवं ओजस्वी वक्ता हैं कि उन्हें सुनने के लिए राजस्थान के बड़े से बड़े अधिकारी एवं राजनेता लालायित रहते हैं। भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति एवं राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भैरों सिंह शेखावत उनके व्याख्यान के सदैव कायल रहते थे। ऐसे विद्वान् पिता एवं दादा की विरासत अपने मजबूत कंधों पर लेकर चल रहे, आर्य समाज के लिए कृतसंकल्प चक्रकीर्ति का निधन निःसंदेह आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है। चक्रकीर्ति सामवेदी की स्मृति में आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर में 15 जनवरी, 2019 को आयोजित श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उक्त शब्दों से श्री चक्रकीर्ति सामवेदी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि चक्रकीर्ति सामवेदी श्री सत्यव्रत सामवेदी जी के इकलौते पुत्र थे और पूरे परिवार का दायित्व उन्हीं के कंधों पर था। उनकी बड़ी बहन ऋतम्भरा के अतिरिक्त अपने पीछे वे अपने माता–पिता श्री सत्यव्रत सामवेदी एवं श्रीमती मृदुला सामवेदी, अपनी पत्नी श्रीमती शालिनी तथा अपनी पुत्रियों कु. वर्धा एवं कु. मेधा को छोड़कर 51 वर्ष की आयु में वे दिवंगत हो गये। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शालिनी एवं उनकी पुत्रियों के ऊपर ही अब श्री सत्यव्रत सामवेदी के परिवार का दायित्व आ गया है। स्वामी जी ने सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत की सद्गति और असह्य दुःख से ग्रसित परिवार को सामर्थ्य तथा शक्ति देने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री राम सिंह आर्य ने श्री चक्रकीर्ति सामवेदी को एक सहृदय, मिलनसार एवं प्रतिभावान नवयुवक की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि वे भविष्य की योजनाओं पर मुझसे देर–देर तक विचार–विमर्श किया करते थे। आर्य समाज को उच्च शिखर तक ले जाने की उनकी अनेक योजनाएं थी। किन्तु उनके असामयिक निधन से वे सभी अधूरी रह गई। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि उनके द्वारा छोड़े गये अधूरे कार्यों को पूरा करना ही होगी।

राजस्थान के लोकायुक्त पूर्व न्यायाधीश श्री सज्जन सिंह कोठारी जी ने श्री चक्रकीर्ति सामवेदी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि वे विविध गुणों से सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी थे और विनम्रता उनके व्यक्तित्व का श्रृंगार थी।

श्रद्धांजलि सभा में जयपुर और पूरे राजस्थान के कोने–कोने से हजारों लोग सम्मिलित हुए और उन्होंने अपने अश्रुपूर्ण नेत्रों से दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की। श्रद्धांजलि सभा का वातावरण अत्यन्त भावुकता से ओत–प्रोत एवं गमगीन बना हुआ था। प्रत्येक व्यक्ति की जुबान पर एक ही शब्द था कि ये अचानक कैसे हो गया। इसकी कोई दूर–दूर तक सम्भावना नहीं थी, किन्तु ईश्वर की अटल व्यवस्था के समक्ष नतमस्तक होने के सिवाय कोई विकल्प नहीं है।

श्रद्धांजलि देने वालों में मुख्यतया राजस्थान हाई कोर्ट के सेवानिवृत्त जस्टिस श्री पानाचन्द जैन, जस्टिस श्री दवे, सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष एवं दिल्ली हाई कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आर.एस. तोमर, श्री अशोक आर्य, कार्यकारी प्रधान श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, श्री बिरजानन्द एडवोकेट महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, श्री मधुर प्रकाश शास्त्री उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री भंवर लाल आर्य अधिष्ठाता आर्य वीरदल राजस्थान, श्री नारायण सिंह आर्य उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री रमाकान्त सारस्वत अन्तरंग सदस्य सार्वदेशिक सभा, श्री चांदमल आर्य एवं श्री भंवर लाल अटवाल जोधपुर, श्री अनन्त राम आर्य नगर भरतपुर, श्री अशोक प्रणामी अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी राजस्थान, श्री ओम प्रकाश वर्मा मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री यशपाल 'यश' अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् राजस्थान, श्री जयदेव शर्मा 'अनल' पत्रकार, श्री बलदेव राज आर्य कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आदि प्रमुख थे।

श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने श्रद्धांजलि सभा में पधारे सभी शुभचिन्तकों एवं परिवार के हितैशियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि मुझे अनेक महत्त्वपूर्ण लोगों की शोक सभाओं में जाकर प्रवचन करने का अवसर मिला है और मैंने अपने प्रवचनों में शोक संतप्त परिवारों को शोक से निकल कर जीवन की मुख्यधारा में आने की प्रेरणा दी है, किन्तु आज मैं स्वयं यह अनुभव कर रहा हूँ कि मैं स्वयं इस शोकग्रस्त स्थिति में से निकल नहीं पा रहा हूँ। मेरी आयु और मेरा स्वास्थ्य अब मुझे ये इजाजत नहीं देता कि मैं पूर्व की भांति अपने दायित्वों को निभा पाऊँगा, किन्तु मेरे हृदय में आज भी उतना ही उत्साह एवं कार्य करने की लगन विद्यमान है। मेरी इच्छा थी कि आर्य समाज एवं मेरे सभी कार्यों की जिम्मेदारी चक्रकीर्ति अपने ऊपर लेकर मुझे आश्वस्त करे कि जो यज्ञाग्नि मेरे पूज्य पिता तथा पूज्य दादा के कर–कमलों से प्रज्ज्वलित की गई थी वह मेरे परिवार में कभी बुझ न पाये, किन्तु चक्रकीर्ति की मृत्यु ने मेरे सपनों को तोड़ दिया और अब ईश्वर ही यह शक्ति देगा कि मैं जब तक शरीर में एक भी प्राण बाकी है तब तक महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के मिशन को आगे बढ़ाने में सक्षम हो सकूँ। श्री सामवेदी जी ने कहा कि आप सबकी उपस्थिति से मुझे और मेरे परिवार को विशेष शक्ति मिली है और मैं यह अपेक्षा रखता हूँ कि आप सबका स्नेह मेरे साथ बना रहे। श्रद्धांजलि सभा का मंच संचालन आर्य समाज के धर्माचार्य पं. जानकी प्रसाद शर्मा ने किया। इससे पूर्व सामवेदी निवास पर शांति यज्ञ भी पं. जानकी प्रसाद शर्मा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। रस्म पगड़ी की परम्परा को तोड़ते हुए चक्रकीर्ति सामवेदी के साले श्री हिमांशु जी ने जो सपरिवार लंदन से पधारे थे चक्रकीर्ति की दोनों बेटियों कु. वर्धा एवं कु. मेधा को ही पगड़ी सौंपकर परिवार का पूरा दायित्व उनके कंधों पर डाल दिया। अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक संस्थाओं द्वारा भेजे गये शोक प्रस्ताव भी श्रद्धांजलि सभा में श्री अशोक आर्य उदयपुर ने पढ़कर सुनाये।

युग परिवर्तन के लिए इन आसुरी तत्वों से लड़े

अवांछनीयता का आसुरी तत्व है तो एक ही, पर उसका प्रवेश जिस क्षेत्र में होता है, वहां उसका नाम, रूप उसी आकार–प्रकार का बन जाता है। इन्हें वर्गीकरण की सुविधा के लिए पांच भागों में विभक्त किया गया है – (1) मूढ़मान्यताएँ, (2) दुष्प्रवृत्तियाँ, (3) निष्ठुरताएँ, (4) अनैतिकताएँ, (5) कुरीतियाँ।

मूढ़मान्यताएँ :– मनुष्य की दूरदर्शिता, विवेकशीलता के अभाव में पनपती हैं। कई व्यक्ति व्यावसायकि कार्यों में तो बहुत कुशल होते हैं और लाभ–हानि का लेखा–जोखा लेते हुए फूंक–फूंककर कदम बढ़ाते हैं, पर प्रचलनों की उपयोगिता के सम्बन्ध में उपेक्षा बरतते हैं। मानसिक आलस्य के कारण उधर ध्यान ही नहीं देते और जो कुछ भला–बुरा ढर्रा व्यवहार में आता रहता है; उसी को अपनाए रहने में सरलता समझते हैं। नुक्ता–चीनी, जाँच–पड़ताल और विधि–निषेध के झगड़े पड़ते हैं, तो साथी–सम्बन्धियों की प्रतिगामिता आड़े आती है; झंझट खड़ा होता है। ऐसे लोग अवांछिनीय मान्यताओं की व्यर्थता समझते हुए भी पुराने अभ्यास और साथियों के समर्थन में उसे छोड़ने की हिम्मत नहीं करते; जो समय, श्रम और धन की बरबादी के अतिरिक्त लाभदायक किसी भी दृष्टि से नहीं है। कइयों का तो प्राचीनता का मोह कट्टरता के स्तर तक जा पहुँचता है और प्रचलित ढर्रे का जोरदार समर्थन करते हैं; भले ही इसके लिए उनके पास तर्क और तथ्यों का आधार तनिक भी न हो।

मूढ़मान्यताएं हटाने के लिए बौद्धिक क्रांति का उद्घोष आर्य समाज तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा किया गया है कि हर व्यक्ति विचारशील बने। प्रचलन चिरकाल से चला आ रहा है या नया आरम्भ किया जा रहा है; इस पर विचार करना आवश्यक नहीं। आवश्यक यही है कि उचित–अनुचित का, हित–अनहित का विवेक रखा जाए और गुण–दोष पर विचार किया जाये। तुलनात्मक समीक्षा की दृष्टि से जो ग्राह्य हो, उसी को स्वीकार किया जाये।

दुष्प्रवृत्तियों का अर्थ है – बुरी आदतें। बुरी आदतें वे हैं; जो निकृष्ट योनियों में रहने तक तो जीवन के लिए उपयोगी थीं, पर अब मानव जीवन का उत्तरदायित्व सिर पर आते ही अनुपयोगी हो गईं। छोटे बालक बिना लंगोटी के नंग–धड़ंग बने रह सकते हैं, पर वयस्क होने पर उस तरह रहना उचित नहीं रहता। छोटे बालक कहीं भी मल–मूत्र त्याग सकते हैं, पर बड़े होने पर उन्हें मर्यादाओं का पालन करना पड़ता है। पशु–प्रवृत्तियों में नैतिक या सामाजिक बंधन नहीं होते, मनमरजी का आचरण करने की छूट रहती है, पर मनुष्य पग–पग पर कर्त्तव्यों से बंधा है। वह ऐसा स्वेच्छाचार नहीं बरत सकता है; जिसमें वैयक्तिक मर्यादा और समाज व्यवस्था का उल्लंघन होता है तथा दूसरों के साथ सद्व्यवहार का हनन। संस्कृति और सभ्यता की मर्यादाएँ सदाचार, शिष्टाचार कहलाती हैं। अपने गुण, कर्म और स्वभाव को मानवीय सुव्यवस्था के अन्तर्गत ढालने का प्रयत्न करने से ही मानवीय गरिमा की रक्षा होती है। इस दिशा में उपेक्षा बरतना और पशु–स्वभाव की अनगढ़पन की आदतें बनाए रहना दुष्प्रवृत्तियाँ कहलाता है। इन्हें छोड़ने और पद के अनुरूप आचरण करने का अभ्यास ही जीवन साधना है। इस दिशा में बरती जाने वाली उपेक्षा को दूर करने को दुष्प्रवृत्ति निवारण कह सकते हैं।

मूढ़मान्यताओं और दुष्प्रवृत्तियों के पश्चात् अवांछनीयताओं में तीसरी का नाम है – निष्ठुरता। स्पष्ट है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। आदिमकाल से लेकर आज की सृष्टि का मुकुटमणि कहलाने की स्थिति तक पहुँचने का श्रेय सहकारिता के आधार पर ही हुआ है। सुविधा–साधनों का उपार्जन सम्भव होने की स्थिति मिल–जुलकर रहने एवं आदान–प्रदान करने की सत्प्रवृत्ति से ही सम्भव है। यह सहकारिता एक–दूसरे के दुःख–सुख को अपने जैसा अनुभव करने की भाव–संवेदना से ही विकसित होती है; अन्यथा झुंड में रहने भर से कोई बड़ी बात नहीं बनती। पारिवारिक स्नेह, सद्भाव, सौजन्य, सहयोग की प्रवृत्ति जिसमें जितनी है; उसकी आत्मिक स्थिति उतनी ही दृढ़ मानी जाती है और वह उतना ही श्रद्धा–सम्मान का पात्र बनता है। दूसरों के प्रति जिन्हें सहानुभूति नहीं, मात्र अपने स्वार्थ में जो डूबे रहते हैं; ऐसे मनुष्य रूखे, नीरस, कठोर, संकीर्ण एवं घिनौने समझे जाते हैं। अपने को दूसरों की चिन्ता नहीं, तो दूसरे ही उदारता का व्यवहार क्यों करेंगे और क्यों सद्भाव रखेंगे? ऐसी दशा में अपने मतलब से मतलब रखने की नीति अपनपाने वाले भौतिक क्षेत्र में सहयोग और आत्मिक क्षेत्र में शांति–संतोष पाने से वंचित ही बने रहते हैं। निष्ठुरता इसी स्तर की मनोवृत्ति को कहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने साथियों तक के हितसाधन की उपेक्षा करके अपना ही स्वार्थ सिद्ध करने की बात सोचते हैं। दूसरों की पीड़ा परेशानी की उन्हें तनिक भी चिन्ता नहीं होती। इस प्रवृत्ति को हेय माना गया है; उसके दुष्परिणाम व्यक्ति और समाज, दोनों को ही भुगतने पड़ते हैं। अस्तु, इसे अवांछनीयताओं के वर्ग में ही गिना गया है।

अनैतिकता – उस दुष्टता का नाम है; जिसमें मनुष्य पशुता से नीचे उतरकर पैशाचिकता के स्तर तक जा पहुँचता है। चोरी, उठाईगिरी, बेईमानी, शोषण, अपहरण, हत्या, लूट, डकैती, ठगी जैसे दुष्कर्म इसी श्रेणी में आते हैं। जब तक मनुष्य स्वार्थी, असहयोगी, स्वेच्छाचारी रहता है; तब तक वह पशु कहा जाता है, पर जब आक्रमणकारी बन जाता है और दूसरों के अधिकारों के अपहरण के लिए 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाला जंगल का कानून हाथ में लेता है; तो उसे अपराधी कहते हैं। छोटे अपराधों को अनैतिकता और बड़े अपराधों को दुष्टता कहते हैं। दोनों तत्त्वतः हैं एक ही अन्तर उग्रता भर का है। पशु–प्रवृत्तियाँ निन्दनीय मानी जाती हैं, पर दुष्टताओं की रोकथाम के लिए तो सामाजिक एवं शासकीय दंड–व्यवस्था भी बनी हुई है। अनैतिकताओं और दुष्टताओं से समाज में असुरता और आतंक की स्थिति उत्पन्न होती है। अनीति में विक्षोभ उत्पन्न होते हैं। यदि उसे सहन किया जाये तो अशांति, जनजीवन में असुरक्षा की भावना से अस्त–व्यस्तता बढ़ती है और दुष्टता को खुला प्रोत्साहन मिलता है। इसलिए अनीति की जड़ें काटने और उसके प्रचलन के उन्मूलन के प्रयास आवश्यक माने गये हैं। निष्ठुरता और अनैतिकता के विरोध में निरन्तर प्रयासरत रहना चाहिए।

पांचवीं अवांछनीयता है – कुरीतियाँ। मानवीय गति का क्रम अनवरत रूप से चलता रहता है; फलतः एक समय के रीति–रिवाज दूसरे समय की बदली हुई परिस्थितियों में बेकार होते रहे हैं। उनके स्थान पर नये प्रचलन आरम्भ करने पड़े हैं। यह हेर–फेर सदा से होता रहा है और सदा ही होता रहेगा। यह स्वाभाविक है और आवश्यक भी। बुद्धिमान लोग ऐसे परिवर्तन अपनी दूरदर्शिता से पहले ही कर लेते हैं। प्रतिगामिता इसमें बाधा डालती है, उसे प्राचीनता से मोह और नवीनता से चिढ़ होती है। समस्त भली–बुरी परम्पराएं उन्हें धर्म लगती हैं और उन्हें अपनाए रहने के आग्रह में यह भूल जाते हैं कि बदली हुई परिस्थितियों में उस सड़े–गले, कूड़ा–करकट को जमा करने से क्या लाभ, जो किसी समय उपयोगी भले ही रहा हो, पर अब तो वैसी स्थिति नहीं रह गई है।

– युग निर्माण से साभार

23 जनवरी, (जयन्ती) पर पावन स्मरण

नेताजी के जीवन के प्रेरक एवं रोमांचक प्रसंग

– बद्रीनारायण तिवारी

सन् 1947 ई. के पूर्व भारत दासता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। इसे आजाद कराने में देशवासियों को न केवल भीषण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा बल्कि बेशुमार कुर्बानियाँ भी देनी पड़ी। स्वतंत्रता संघर्ष के दरम्यान जिन योद्धाओं ने अपने सर्वस्व को न्यौछावर कर, उसे सफल बनाने में समर्पित मानव का परिचय दिया। उसमें मुख्य रूप से महर्षि दयानन्द सरस्वती, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, लोकमान्य तिलक, तात्या टोपे, राजेन्द्र प्रसाद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

उन्हीं सेनानियों के बीच जवानी, उत्साह, उमंग एवं स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति महान् देशभक्त ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा'' के क्रांतिकारी उद्घोषक और 'आजाद हिन्द फौज' के संस्थापक सुभाष चन्द्र बोस' का नाम कौन नहीं जानता। जिन्होंने देश आजाद बनाने के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिये।

सुभाष चन्द्र बोस का जन्म बंगाल के चौबीस परगना जिले के कड़ोलिया नामक ग्राम में 23 जनवरी, 1897 ई. को हुआ था। उनके पिता जानकीनाथ बोस थे। कटक (उड़ीसा) के मिशनरी स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज से एफ.ए. की परीक्षा पास की। सुभाष चन्द्र बोस ने 1919 ई. में स्काटिश चर्च कालेज से बी.ए. की परीक्षा में दर्शनशास्त्र में विश्वविद्यालय भर में सर्वप्रथम हुए। इंग्लैण्ड में आई.सी.एस. परीक्षा में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान और नीति शास्त्र का ट्राइपास कोर्स लेकर ग्रेजुएट भी हुए।

प्रेसीडेन्सी कॉलेज के छात्रावास में जो घटना घटित हुई थी, उससे सुभाष की क्रांतिकारी विचारधारा का परिचय मिलता है। जब वे प्रेसीडेन्सी कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, उसी क्रम में मि. वोटन नामक एक दुष्ट गोरा महाविद्यालय में प्राध्यापक था। भारतीय छात्रों के प्रति उसका अत्यधिक अपमानजनक दुर्व्यवहार देखकर सुभाष को गहरा आघात लगा। सुभाष वेदना को दबा नहीं सके और आवेश में आकर उन्होंने उस प्राध्यापक को पीट दिया। इसी सम्बन्ध में महाविद्यालय के छात्रों के द्वारा एक बड़ी हड़ताल की गई। परिणामस्वरूप सुभाष दो वर्षों तक विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिये गये।

सुभाष चन्द्र बोस में बाल्यावस्था से ही आध्यात्मिक जिज्ञासा थी। उसी की प्रेरणा से वे एक दिन अपने परिवार के माता–पिता के मोह–बन्धन को तोड़कर घर से भाग निकले। लगभग छह मास तक वे वृन्दावन, काशी, हरिद्वार आदि तीर्थों, मंदिरों, मठों में भी भ्रमण करते रहे। वे सच्चे गुरु के अन्वेषण में निकले थे। परन्तु तीर्थ स्थलों के साधु, संन्यासियों का जीवन बड़ा विलासमय दिखाई पड़ा, जिससे उन्हें घृणा हो गई और वे घर लौट कर चले आये।

सुभाष में अद्भुत संगठन क्षमता थी। उनकी वाणी में एक आकर्षण था, जो जनता को मोह लेता था। बंगाल का सत्याग्रह आन्दोलन उन्होंने ही किया था, जिसने अधिक जोर पकड़ लिया। 1920 ई. में उन्होंने युवक दल का संगठन किया। जिसके द्वारा कृषकों तथा श्रमिकों का संगठन बनाया था। सन् 1921 ई. में जब अंग्रेजों के द्वारा रौलेट बिल, पंजाब, हत्याकाण्ड, मार्शल लॉ आदि के विरुद्ध देशभर में आन्दोलन चलाया जा रहा था। असहयोग आन्दोलन भी जारी था। स्वतन्त्रता संघर्ष का मध्य संक्रमण काल था। सुभाष बाबू संवेदनशील हृदय के व्यक्ति थे। अंग्रेजों के द्वारा भारतवासियों पर अत्याचार को देखकर वे काफी मर्माहत हो गये और आई.सी.एस. का पद त्याग कर आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े। फलतः गिरफ्तार कर लिये गये।

1924 ई. में कलकत्ता निगम के निर्विरोध मेयर निर्वाचित हुए; किन्तु साल के भीतर ही बंगाल शासन के अध्यादेश के अनुसार उन्हें निश्चित काल के लिए कारावास का दण्ड दिया गया। पहले तो उन्हें कलकत्ते के अलीपुर जेल में रखा गया। पुनः बर्मा की मांडले जेल में नजरबन्द कर दिया गया। वहाँ उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। उन्होंने कारागृह में दुर्गा का त्योहार मनाने के लिए अनशन भी किया। अब उनके शरीर में क्षय के लक्षण प्रकट होने लगे। उन्हें स्विट्जरलैण्ड में जाकर स्वास्थ्य सुधारने की अनुमति दी गई पर शर्त लगा दी गई थी कि बर्मा से वे सीधे चले जायें।

रास्ते में भारत के किसी बन्दरगाह पर न उतरें। उन्होंने इस शर्त को अस्वीकार कर दिया। अन्त में अंग्रेजों के द्वारा बिना शर्त उन्हें छोड़ दिया गया। जेल से छूटने पर वे शीघ्र ही स्वस्थ हो गये।

वे प्रान्त की कांग्रेस समिति के अध्यक्ष चुने गये और 1927 में प्रान्तीय कॉन्सिल में भी निर्वाचित हुए उन्होंने 'इंडिपेन्डेन्स ऑफ इण्डिया लीग' नाम का संगठन बनाया 'साइमन आयोग' के बहिष्कार में भी योगदान दिया। 1928 के कांग्रेस अधिवेशन में स्वयंसेवक सेना के प्रधान सेनानी बने। उन्होंने कांग्रेस डेमोक्रेटिक पार्टी भी कायम की। पुनः उन पर राजद्रोह का झूठा मुकदमा चलाकर साल भर के लिए जेल भेज दिया गया; किन्तु स्वास्थ्य के बिगड़ने पर इलाज के लिए वियाना भेज दिया गया। स्वास्थ्य के कुछ सुधरने पर उन्होंने बुडापेस्ट, मिलान आदि देशों में घूमकर प्रचार किया। लेकिन पीछे सरकार की अनुमति के बिना ही स्वदेश लौट आये। यहाँ आते ही उन्हें जेल में डाल दिया गया। किन्तु पुनः स्वास्थ्य के बिगड़ने पर उन्हें बिना शर्त 1937 में छोड़ दिया गया।

हरिपुरा कांग्रेस के अधिवेशन में मतभेद होने के कारण सभापति के पद से त्यागपत्र देकर कांग्रेस के भीतर ही 'अग्रगामी दल' की स्थापना की। 1940 में रामगढ़ के कांग्रेस अधिवेशन में विशेष भाग लिया। पुनः बन्दी बनाये गये। पुनः अनशन किया। स्वास्थ्य के बिगड़ने पर उन्हें छोड़ दिया गया। किन्तु उनके मकान पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। अब वे एकान्तवास तथा ईश्वराधना में तल्लीन हो गये। इसी बीच हिटलर के नेतृत्व में द्वितीय महासमर शुरू हुआ।

26 जनवरी, 1941 को पुलिस को चकमा देकर भारत से पेशावर होते हुए वे काबुल पहुँच गये। पुनः काबुल के जर्मन दूतावास की सहायता से बर्लिन पहुँच कर हिटलर से मिले। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस श्री चितरंजन दास को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे। उस समय बांगल के नेता देशबन्धु चितरंजनदास जी ही थे। सुभाष चन्द्र बोस ने श्री रासबिहारी बोस की अध्यक्षता में 'आजाद हिन्द सेना' का गठन किया।

1943 के मध्य वे जर्मनी से जापान पहुँचे। सुदूर पूर्व में बसने वाले भारतीयों को सुसंगठित कर अंग्रेजों और अमेरिकियों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और बर्मा की ओर से भारत के पूर्वी सीमान्त पर आक्रमण कर दिया। इस सेना में रानी लक्ष्मीबाई के नाम से भारतीय वीरांगनाओं की भी सेना थी। उस रण–कुशल वीर का सैनिक संगठन अपूर्व था। इसमें लगभग 50 हजार सशस्त्र सैनिकों की एक सुसंगठित पलटन थी। उस सेना के सैनिक गोलों की बौछारें करते हुए शत्रुओं के टैंकों के मार्ग में लेटते हुए तनिक भी भयभीत नहीं होते थे। इस मोर्चे के सम्मुख अंग्रेजी सैनिकों के प्राण सूख गये और भारतीयों का हौसला बुलन्द हो गया। किन्तु कालचक्र उलटा चला। जर्मनी पराजित हो गया तथा अमेरिका के अणु बम से जापानियों को आत्मसमर्पण करना पड़ा। इसी बीच सुभाष चन्द्र बोस भी अन्तर्ध्यान हो गये।

सुभाष चन्द्र बोस जितने बड़े देशभक्त थे, उतने ही बड़े पितृभक्त थे। वे इण्टर की परीक्षा दिये बिना आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे। जिसके कारण इनके पिता जी नाराज रहने लगे थे। एक दिन इनकी माता जी ने इनसे कहा – ''तुम्हारे पिता जी तुम्हारे व्यवहार से तुम पर क्षुब्ध रहते हैं सुभाष। पढ़ना–लिखना छोड़कर नेतागिरी करते फिरते हो! जिसके कारण उनके हृदय में तुम्हारे प्रति आक्रोश होना उचित भी है।'' यह संवाद सुनते ही उनका हृदय अपने पिता के प्रति न सिर्फ श्रद्धा और भक्तिभाव से भर गया, बल्कि उनसे मिलने की जिज्ञासा भी जग गई।

एक दिन सुभाष अपने पिता को अकेले में बैठे देखकर उनके निकट चले गये और साष्टांग प्रणाम प्रस्तुत कर अपने प्रति नाराजगी का कारण जानना चाहा। इस पर उनके पिता जी ने डांट लगाते उनसे कहा – ''तुम इस बात को नहीं जान पाओगे सुभाष! कि पुत्र के जन्म काल के समय पिता को कितनी खुशी होती है और उसके प्रति वह क्या–क्या अरमान सजा लेता है। मैंने भी तुम्हारे जन्म के समय कुछ अरमान संजोये थे, जो सब मिट गये और पुत्र भी कुपुत्र निकल गया। ऐसे में उस दुःखी पिता के मन में उस पुत्र के प्रति आक्रोश के सिवाय और क्या हो सकता है?''

तब सुभाष ने बहुत विनम्रतापूर्वक उनकी बात जानने की जिज्ञासा प्रकट करते हुए कहा – ''कौन–कौन से अरमान मेरे जन्मकाल में संजोये थे पिता जी! मुझे बताने की कृपा करें, मैं उसे पूरा करने का पुरजोर प्रयास करूँगा। अब तुम लीक से हट गये हो सुभाष! नेतागिरी में तुम सब कुछ समाप्त कर चुके हो। अब तुम से वह काम सम्भव नहीं है, लेकिन जानना चाहते हो तो सुनो – ''तुम्हारे जन्मकाल के समय समाचार पत्र में किसी लड़के के इंग्लैण्ड जाकर आई.सी.एस. की परीक्षा पास करने का समाचार छपा था। जिसे पढ़कर मैंने भी तुम्हें इंग्लैण्ड भेजकर आई.सी.एस. बनाने का सपना संजोया था और तुम्हें बी.एस.सी. की परीक्षा पास कराकर इंग्लैण्ड भेजना चाहता था, जिससे तुम भटक गये हो। तब बड़े विश्वासपूर्वक सुभाष ने अपने पिता का चरणस्पर्श करते हुए कहा – ''मैं संकल्प लेता हूँ पिता जी! बी.एस.सी. की परीक्षा पास कर इंग्लैण्ड अवश्य जाऊँगा और आई.सी.एस. की डिग्री प्राप्त कर आपके श्री चरणों पर अर्पित करूँगा। आप मुझे केवल आशीर्वाद देकर अनुगृहीत करें।''

अब यह सम्भव न होगा सुभाष! क्योंकि तुम इण्टर की परीक्षा दिये बिना पढ़ाई छोड़ चुके हो। अब नेतागिरी छोड़कर पुनः पढ़ने की ओर जाना असम्भव लगता है। नहीं पिता जी! दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं होता। मनुष्य अगर किसी काम को करने के लिए दृढ़ संकल्प कर ले तो उस काम को किये बिना उसे चैन नहीं मिलता। भले भीषण से भीषण बाधाएँ भी उसके राह पर रोड़े बनकर आ जायें, लेकिन यह मंजिल पाकर ही दम लेता है। मैं देश को आजाद कराना अवश्य चाहता हूँ पिता जी! लेकिन देशभक्ति से अधिक बड़ी पितृभक्ति होती है। देश पुत्र का भरण–पोषण करता है, परन्तु पिता पुत्र को जन्म देता है। अतएव देशभक्ति से पितृभक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण है। अतः मैं पहले पिता को प्रसन्न कर, पीछे देश की सेवा करूँगा।

सुभाष ने अपने पिता को आश्वस्त कर पुनः महाविद्यालय में नामांकन करा लिया और बी.एस.सी. तक की परीक्षा पास करने के पश्चात् इंग्लैण्ड चले गये और वहां से आई.सी.एस. में सफलता प्राप्त कर अपने घर लौट आये। सुभाष के पिता जानकीनाथ बोस को जब इसकी जानकारी हुई तो वे काफी खुश हुए तथा पुत्र को बुलाकर बहुत आशीर्वाद दिया और डिग्री प्राप्त करने के लिए बधाई भी दी। सुभाष ने भी आई.सी.एस. में उत्तीर्ण होने की डिग्री पिताश्री के चरणों पर चढ़ा दी और विनम्रतापूर्वक चरणस्पर्श करते हुए कहा – ''पिता जी! अब तो आप हमसे प्रसन्न हैं न.....? क्योंकि आपका सपना और मेरा संकल्प दोनों साकार हो गये। हाँ सुभाष! अब मैं प्रसन्न हूँ। तुमसे कोई शिकायत नहीं है। मेरी समझ में यह बात भी आ गई कि दृढ़ संकल्प के सहारे मनुष्य असम्भव को भी सम्भव बना सकता है जैसा कि तुमने आज करके दिखा दिया है।

इस पर विनम्रतापूर्वक सुभाष ने कहा – ''आपके आदेश का अनुपालन तो हो गया पिता जी! अब मेरा अरमान देश को आजाद कराने का है, जिसका मैं हृदय से संकल्प ले चुका हूँ। अतः इसकी सफलता के लिए आशीर्वाद दीजिए।'' इसके बाद सुभाष चन्द्र बोस पुनः स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। यह नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की देशभक्ति के साथ–साथ पितृभक्ति भी थी।

सुभाष चन्द्र बोस ने मृत्युपर्यन्त देशभक्ति और पितृभक्ति दोनों मर्यादाओं का एक साथ निर्वहन किया। यह महान् उदाहरण आज के पिता–पुत्र के बीच टूटते रिश्तों के लिए न केवल प्रेरक हैं, अपितु अनुकरणीय भी। इस प्रकार अपने बलबूते पर अद्भुत साहस प्रदर्शित करने वाले नेता जी सुभाष चन्द्र बोस वास्तव में अभिमन्यु थे। अभिमन्यु की तरह छोटी अवस्था में ही उनका शौर्य दिखने लगा था।

'कदम कदम बढ़ाये जा, खुशी के गीत गाये जा।
यह हिन्दगी है कौम की, तू कौम पे मिटाये जा।''...

वर्तमान नवयुवक अनुभव करें कि शिक्षा का वास्तविक अर्थ मात्र धन कमाना है या साथ ही माता–पिता तथा देश के प्रति निष्ठा में बांधने के लिए? नेता जी ने आजाद हिन्दी फौज के सैन्य 'काशन' तथा प्रयाण गीत (मार्च पास्ट) में जन भाषा हिन्दी को ही मान्यता दी। ऐसे थे दूरदर्शी नेता जी।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा राजस्थान का तूफानी दौरा

बहरोड़ से जयपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, माउण्ट आबू, सांचौर, पथमेड़ा गोधाम, शिवगंज, पाली तथा जोधपुर में कार्यकर्ताओं से सम्पर्क एवं विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर आर्य समाज की गतिविधियों को तीव्र गति प्रदान करने की दी प्रेरणा

सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री राम सिंह आर्य जी की सुयोग्य सुपुत्री श्रीमती मनीषा पंवार का जोधपुर शहर विधानसभा क्षेत्र से विधायक चुने जाने पर

आर्य समाज फोर्ट में किया गया सार्वजनिक अभिनन्दन

जोधपुर शहर विधानसभा क्षेत्र से चुनी गई विधायिका श्रीमती मनीषा पंवार के अभिनन्दन समारोह में बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गत 9 जनवरी, 2019 से 13 जनवरी, 2019 तक राजस्थान के विभिन्न स्थानों का तूफानी दौरा करते हुए आर्य समाज के कर्मठ एवं निष्ठवान कार्यकर्ताओं को आर्य समाज की गतिविधियों को तेज करने की प्रेरणा प्रदान की। उनके इस दौरे में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट, हरियाणा आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र जी, कार्यकारी अध्यक्ष श्री सज्जन सिंह राठी, महामंत्री श्री ऋषिराज शास्त्री, प्रदेश प्रवक्ता श्री प्रदीप कुमार, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् दिल्ली के अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र एवं कार्यकारिणी सदस्य मास्टर अजीत पाल जी भी उनके साथ रहे।

स्वामी जी 9 जनवरी, 2019 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ रोहतक से चलकर गुड़गांव पहुँचे। जहाँ श्री विशाल मलिक एवं उनकी माता जी श्रीमती सुमित्रा जी से संक्षिप्त विचार–विमर्श करने के पश्चात् सायं 7 बजे आर्य समाज आदर्शनगर जयपुर पहुँचे। जयपुर में पण्डित जानकी प्रसाद शास्त्री जी ने आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की हुई थी। यहाँ आर्य समाज के नेता और सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी से विशेष भेंट करने उनके स्वास्थ्य एवं कुशलक्षेम की जानकारी लेने के पश्चात् उनसे सार्वदेशिक सभा एवं संगठन की भावी योजना पर विस्तार से विचार–विमर्श किया। सामवेदी जी गत लम्बे समय से अस्वस्थ होने के कारण सामाजिक कार्यों में भाग नहीं ले पा रहे थे किन्तु अदम्य साहस एवं मनोबल के कारण वे अब अत्यन्त स्वस्थ प्रतीत हो रहे थे और उन्होंने देश में साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए विशेष अभियान चलाने की अपनी इच्छा भी व्यक्त की। श्री सामवेदी जी ने स्वामी जी से कहा कि आपसे मिलने के बाद मेरे अन्दर नई स्फूर्ति एवं ऊर्जा उत्पन्न हो जाती है। अतः आप मुझसे थोड़े–थोड़े समय के पश्चात् अवश्य मिलते रहें अथवा दूरभाष से बातचीत करते रहें। श्री सामवेदी जी से बातचीत करने के पश्चात् पं. जानकी प्रसाद जी की धर्मपत्नी विदुषी बहन सरला शास्त्री का कुशल क्षेम पूँछने के लिए स्वामी जी उनके घर पहुँचे और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। गत् 10–15 दिन से बहन सरला शास्त्री भी काफी गम्भीर अस्वस्थ रहीं। परन्तु ईश्वर की कृपा से वे दिन–प्रतिदिन स्वस्थ होती जा रही हैं। आशा है शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ होकर वे अपने कार्यों में पुनः सक्रिय हो जायेंगी।

श्रीमती मनीषा पंवार
विधायक, जोधपुर शहर

10 जनवरी, 2019 को जयपुर से प्रस्थान करके स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके सभी सहयोगी चित्तौड़गढ़ होते हुए सायं 7 बजे श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नौलखा भवन, गुलाबबाग, उदयपुर पहुँचे, जहाँ न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष युवा विद्वान् श्री अशोक आर्य जी ने स्वामी जी का आतिथ्य एवं अभिनन्दन किया। सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं आर्य समाज की विविध महत्वाकांक्षी योजनाओं के सम्बन्ध में श्री अशोक आर्य जी एवं सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य सभी कार्यकर्ताओं के साथ विस्तार से विचार–विमर्श हुआ। श्री अशोक आर्य जी ने सत्यार्थ प्रकाश न्यास की भावी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि शीघ्र ही न्यास के भवन की मरम्मत एवं इसके नवीनीकरण के द्वारा इसे आकर्षक एवं आम जनता के लिए दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया जायेगा। संस्कार वीथिका, (16 संस्कारों पर संक्षिप्त दृश्य एवं श्रव्य तकनीक को मूर्त रूप देना) ज्ञानवर्द्धक थ्री–डी फिल्मों का प्रदर्शन करने की व्यवस्था, साहित्य विक्रय का आकर्षक स्टाल एवं महर्षि दयानन्द दीर्घा का विस्तार आदि महत्त्वाकांक्षी योजनाएं तैयार की गई हैं जिन्हें आर्यजनों के सहयोग से शीघ्रातिशीघ्र पूरा किया जायेगा। श्री अशोक आर्य जी ने बताया कि गत एक वर्ष में लगभग 35 हजार पर्यटकों ने महर्षि दयानन्द दीर्घा को देखा और अपनी अत्यन्त सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करके दर्शक पंजिका में अंकित भी किया। न्यास की ओर से समस्त दर्शकों से सामान्य शुल्क भी दीर्घा देखने के लिए लिया जाता है। उनका मानना है कि उपरोक्त योजनाओं के क्रियान्वयन के पश्चात् लाखों दर्शक एवं पर्यटक न्यास को देखने आयेंगे और महर्षि दयानन्द के जीवन, सोलह संस्कार एवं अन्य चरित्र निर्माण की विशेष जानकारी उन्हें प्राप्त होगी, साथ ही वे वैदिक साहित्य भी विशेष रूप से खरीदेंगे।

विधायक श्रीमती मनीषा पंवार के अभिनन्दन का विहंगम चित्र

11 जनवरी, 2019 को प्रातः न्यास की यज्ञशाला में स्वामी आर्यवेश जी ने विशेष यज्ञ सम्पन्न कराया तथा न्यास के विकास के लिए विशेष आर्थिक सहयोग का संकल्प भी लिया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा की ओर से ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने 1100 रुपये न्यास को दान किये। न्यास में किये गये आतिथ्य के लिए स्वामी जी ने डॉ. अशोक आर्य जी एवं समस्त पदाधिकारियों तथा न्यास में कार्यरत पुरोहित श्री नवनीत कुमार आदि का विशेष आभार व्यक्त किया।

उदयपुर से चलकर स्वामी जी एवं अगले पृष्ठ पर जारी

पृष्ठ 4 का शेष

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा राजस्थान का तूफानी दौरा

रानीबाड़ा के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के बीच सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा उनकी टीम के सदस्य

उनके अन्य साथी गुरुकुल माण्उट आबू पहुँचे, जहाँ आचार्य ओम प्रकाश जी शास्त्री एवं उनके सहयोगियों ने आत्मीयता के साथ सभी का स्वागत किया और पहली बार गुरुकुल में पधारने के लिए स्वामी आर्यवेश जी का विशेष आभार व्यक्त किया। स्वामी जी गुरुकुल के संस्थापक पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी से भी मिले और उनसे आर्य समाज की गतिविधियों के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की। गुरुकुल आबू पर्वत में गुरुकुल के समस्त ब्रह्मचारियों द्वारा आचार्य ओम प्रकाश जी ने स्वामी आर्यवेश जी का विशेष सम्मान करवाते हुए उन्हें बताया कि स्वामी आर्यवेश जी वर्तमान में आर्य समाज के तेजस्वी एवं कर्मठ संन्यासी हैं और देश–विदेश में आर्य समाज के कार्य में दिन–रात जुटे रहते हैं। सभी ब्रह्मचारी स्वामी जी से मिलकर अत्यन्त प्रेरित हुए। गुरुकुल में भोजन करने के पश्चात् स्वामी जी का आशीर्वाद लेकर और आचार्य ओम प्रकाश जी का विशेष धन्यवाद ज्ञापित करके स्वामी आर्यवेश जी एवं उनके सहयोगी संघवी भैरूमल तारक धाम अनाद्रा में पहुँचे और रात्रि विश्राम किया।

12 जनवरी, 2019 को प्रातः 8 बजे तारकधाम अनादरा से चलकर रानीबाड़ा कस्बे में स्वामी आर्यवेश जी एवं उनके सभी साथी पहुँचे, जहाँ आर्य समाज जालौर के प्रधान श्री विनोद आर्य, राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के महामंत्री श्री शिवदत्त आर्य, जालौर के पार्षद् श्री भरत कुमार मेघवाल आदि ने रानीबाड़ा के अनेक गणमान्य महानुभावों के साथ स्वामी जी और उनके साथियों का राजस्थान की परम्परा के अनुसार पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। स्वामी आर्यवेश जी को सभी ने माल्यार्पण तथा शॉल भेंट करके विशेष रूप से सम्मानित किया। सामान्य जलपान के पश्चात् श्री शिवदत्त आर्य, श्री विनोद आर्य एवं श्री भरत के संयोजन में स्वामी आर्यवेश जी गायत्री विद्या मंदिर सांचौर पहुँचे, जहाँ हजारों विद्यार्थियों एवं नगर के गणमान्य महानुभावों तथा विद्यालय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के विशाल जनसमूह को स्वामी आर्यवेश जी ने सम्बोधित किया। सम्बोधन से पूर्व स्वामी जी का पुनः गायत्री विद्या मंदिर की ओर से शॉल, स्मृति चिन्ह तथा फूल मालाओं से जोरदार स्वागत किया गया। विवेकानन्द जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित इस विशेष आयोजन में स्वामी जी ने एक घण्टे तक धारा प्रवाह अपने ओजस्वी उद्बोधन से उपस्थित श्रोताओं एवं विद्यार्थियों को अत्यन्त प्रभावित किया। स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा के सम्बन्ध में विचार एवं उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने वर्तमान समय की दूषित शिक्षा प्रणाली एवं मानवीय मूल्यों के गिरते हुए स्तर को एक जबरदस्त चुनौती बताया और उन्होंने कहा कि हम सभी का यह दायित्व है कि हम स्वयं अपने जीवन में नैतिकता, ईमानदारी, समाजसेवा, परोपकार, देशभक्ति तथा मानवीय गुणों को अपनाकर पूरे समाज को इन्हीं गुणों से सम्पन्न करने के लिए प्रयत्नशील रहें। स्वामी जी के इस ओजस्वी व्याख्यान से प्रभावित होकर विद्यालय के प्रबन्धकों एवं विद्यार्थियों ने पुनः आने का स्थाई निमंत्रण भी स्वामी जी को दिया। विद्यालय के संचालक श्री राजू राम विश्नोई एवं श्री नारायण लाल सुथार ने स्वामी जी तथा समस्त अन्य साथियों का विशेष आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विद्यालय के सदस्य श्री महेन्द्र सिंह राव, श्री बीजाराम डूडी पत्रकार आदि भी उपस्थित थे। सांचौर में आर्य समाज का जीर्ण–शीर्ण भवन देखने के लिए स्वामी जी अपने साथियों के साथ पहुँचे तथा समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री देवीचन्द्र सोनी उनके सुपुत्र श्री नरेन्द्र सोनी एवं श्री जगदीश पकौड़े वाले, चम्पालाल खत्री पार्षद् आदि से मिलकर स्वामी जी का काफिला देश की सबसे बड़ी गौशाला श्री पथमेड़ा गोधाम पहुँचा।

गायत्री विद्या मंदिर सांचौर में जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

आर्य समाज तथा आर्य वीरदल पाली के पदाधिकारियों तथा आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं के बीच सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

पथमेड़ा गोधाम के संचालक तेजस्वी, कर्मयोगी स्वामी दत्त शरणानन्द जी महाराज से स्वामी जी की विशेष भेंट इस दौरे में विशिष्ट रही। स्वामी दत्त शरणा जी ने स्वामी जी को बताया कि पथमेड़ा गोधाम के अन्तर्गत 64 गोसेवा केन्द्र (गौशाला) चल रहे हैं। जिनमें 1 लाख 22 हजार गोवंश की सेवा का पुण्य यह गोधाम प्राप्त कर रहा है। स्वामी जी के निर्देश पर श्री नन्दराम दास जी महाराज ने स्वामी आर्यवेश जी तथा सभी साथियों को पथमेड़ा गोधाम की परिक्रमा कार द्वारा करवाई। लगभग 2 हजार बीघा जमीन में फैले इस गोधाम में अनुमानतः 15 हजार गोवंश की सेवा हो रही है। गायों की समुचित व्यवस्था जिसमें उनके चारे, पानी तथा बीमार गोवंश के लिए समुचित दवाईयों की व्यवस्था देखकर अत्यन्त आश्चर्यमिश्रित अनुभूति प्राप्त करके स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी दत्त शरणा जी को विशेष साधुवाद दिया तथा उन्हें आश्वस्त किया कि गोवंश की सेवा के इस विशाल केन्द्र को देखने के लिए अन्य गोशाला संचालकों को आने की प्रेरणा देंगे। पथमेड़ा गोशाला के संचालक स्वामी दत्त शरणा जी महाराज ने स्वामी जी तथा उनके साथियों को गौ का सुन्दर चित्र तथा साहित्य भेंट किया और भोजन प्रसाद ग्रहण करवाकर आत्मीयता पूर्ण आतिथ्य किया। उन्होंने स्वामी जी को पुनः पधारने का निमंत्रण भी दिया।

पथमेड़ा से स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य सभी सहयोगी आर्य समाज भीन माल, जिला–जालौर पहुँचे और वहाँ एकत्रित आर्यजनों से परिचय किया। स्वामी जी के साथ श्री विनोद आर्य, श्री शिवदत्त आर्य, श्री भरत मेघवाल भी साथ थे। भीनमाल में आर्यजनों ने स्वामी जी का माल्यार्पण तथा शॉल द्वारा स्वागत किया। फलाहार के पश्चात् वहाँ से सभी ने प्रस्थान किया। भीनमाल से चलकर स्वामी जी तथा उनके साथी आर्य समाज शिवगंज पहुँचे जहाँ आर्य समाज के प्रधान श्री हरदेव सिंह आर्य, जिला कांग्रेस के अध्यक्ष श्री जीवाराम आर्य एवं आर्य समाज तथा आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओं ने स्वामी जी का जोरदार स्वागत किया। परस्पर परिचय एवं इस दौरे की जानकारी के पश्चात् श्री बनवारी लाल आर्य जी के निवास पर सभी ने भोजन ग्रहण किया। श्री बनवारी लाल जी ने बहुत ही सुन्दर भोजन की व्यवस्था की थी। उन्होंने स्वामी आर्यवेश जी का विशेष स्वागत, सत्कार भी किया। रात्रि विश्राम आर्य समाज शिवगंज में हुआ।

13 जनवरी, 2019 को प्रातः 8.30 बजे नाश्ता करने के पश्चात् शिवगंज से स्वामी जी आर्य वीरदल हनुमान शाखा, पाली में पहुँचे। जहाँ आर्य वीरदल के प्रधान श्री धनराज आर्य तथा उनके साथियों ने स्वामी जी का स्वागत किया। पाली प्रवेश के समय भी आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं ने माल्यार्पण द्वारा स्वामी जी का स्वागत करके उनकी अगुवाई की और उन्हें हनुमान व्यायामशाला लेकर गये। हनुमान व्यायामशाला में श्री गणपत आर्य ने बहुत सुन्दर संयोजन करते हुए उपस्थित आर्य वीरों का स्वामी जी से परिचय कराया। इस अवसर पर श्री दिलीप जी गहलोत बॉक्सिंग कोच, श्री विजय राज मंत्री आर्य समाज पाली, श्री ओम प्रकाश वैष्णव पट्टा विशेषज्ञ, श्री देवेन्द्र मेवाड़ा, श्री हनुमान जी आर्य मंत्री आर्य वीरदल, श्री प्रकाश जी जांगीड़, श्री प्रकाश जी सेन, श्री राकेश जी सोनी, श्री शंकर जी हंस, श्री प्रेमवीर आर्य, श्री महेश बागड़ी, श्री दुष्यन्त आर्यवीर, श्री अशोक आर्यवीर, श्री राहुल आर्यवीर, कु. छवि आर्या, श्री विनय आर्यवीर आदि का विशेष रूप से परिचय दिया गया। श्री धनराज आर्य ने अपने भाव व्यक्त करते हुए स्वामी आर्यवेश जी को स्व. श्री मदन सिंह आर्य, स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी अग्निवेश जी की तरह ही अपना प्रेरणास्रोत बताया। उन्होंने कहा कि आज हम अपना अहोभाग्य मानते हैं कि आप अचानक प्रेरणा देने के लिए हमारे मध्य पधारे हैं।

आर्य वीरदल पाली के प्रधान श्री धनराज आर्य सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का सम्मान करते हुए

पाली से स्वामी जी तथा उनके साथी जोधपुर के लिए रवाना हुए और झालामंड चौक पर सर्वश्री रामसिंह आर्य

अगले पृष्ठ पर जारी है

पिछले पृष्ठ का शेष

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा राजस्थान का तूफानी दौरा

उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, भंवर लाल आर्य संचालक आर्य वीरदल राजस्थान, नारायण सिंह आर्य उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, चांदमल आर्य, हरि सिंह प्रधान आर्य वीरदल जोधपुर आदि ने स्वामी जी का स्वागत किया। स्वामी जी अगुवाई के लिए आर्य वीरदल जालौर के संरक्षक श्री दलपत सिंह आर्य, श्री शिवदत्त आर्य मंत्री, श्री विनोद आर्य प्रधान आर्य समाज, श्री कृष्ण कुमार आर्य आदि भी जालौर से चलकर स्वामी जी के साथ सम्मिलित हुए। यहाँ से स्वामी जी पूर्विया प्रजापति छात्रावास पहुँचे जहाँ स्वामी जी का छात्रावास के अधिकारियों ने शानदार आतिथ्य किया। छात्रावास के अध्यक्ष श्री मुन्ना लाल प्रजापति ने छात्रावास पधारने पर स्वामी जी का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

यहाँ से स्वामी जी तथा अन्य सभी सहयोगीगण श्री राम सिंह जी की अगुवाई में श्री राम नारायण जिन्दा छात्रावास, श्री वीर तेजा जी मंदिर के सभागार में पहुँचे जहाँ स्वामी आर्यवेश जी का उपस्थित महानुभावों ने जोरदार स्वागत किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री भंवर लाल काला ने बड़ी कुशलता के साथ करते हुए सभी प्रमुख पदाधिकारियों का स्वामी जी से परिचय कराया। सैकड़ों छात्रों, छात्रावास के पदाधिकारियों एवं सहयोगियों को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने अन्याय से लड़ने के लिए प्रेरणा देते हुए दीनबन्धु सर छोटूराम जी के जीवन में आर्य समाज के प्रभाव पर प्रकाश डाला।

सायं 5 से 8 बजे तक फोर्ट के 60वें वार्षिकोत्सव तथा आर्य वीरदल महावीर शाखा द्वारा आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं में पारितोषिक वितरण समारोह के भव्य आयोजन में स्वामी आर्यवेश जी प्रमुख वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। इसी समारोह में जोधपुर शहर से ऐतिहासिक जीत हासिल करके कांग्रेस की विधायक चुनी गई सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य की सुयोग्य सुपुत्री श्रीमती मनीषा पंवार का भव्य सार्वजनिक अभिनन्दन का कार्यक्रम भी प्रायोजित था। ढोल–नगाड़ों तथा जयकारों के साथ स्वामी आर्यवेश जी तथा बेटी मनीषा पंवार को समारोह स्थल पर ले जाया गया जहाँ उपस्थित हजारों लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका जोरदार स्वागत किया। तत्पश्चात् आर्य समाज एवं विविध संस्थाओं की ओर से नव–निर्वाचित विधायक मनीषा पंवार का सार्वजनिक अभिनन्दन बड़े जोश–खरोश के साथ किया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से उन्हें शुभकामना एवं आशीर्वाद देते हुए उनके यशस्वी जीवन की कामना की। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट, हरियाणा प्रान्त के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र तथा उनके अन्य सभी साथियों ने शॉल भेंट कर मनीषा जी का स्वागत किया। आर्य समाज फोर्ट की ओर से 50 किलो की फूल–माला द्वारा मनीषा जी का शानदार स्वागत किया गया। इसी प्रकार श्री दलपत सिंह आर्य के नेतृत्व में जालौर के आर्यजनों ने, श्री हरदेव सिंह आर्य के नेतृत्व में, शिवगंज के आर्यजनों ने श्री धनराज के नेतृत्व में, पाली के आर्यजनों ने मनीषा जी का हार्दिक स्वागत किया।

श्रीमती मनीषा पंवार के अभिनन्दन समारोह में उमड़े भारी जन-समूह का एक दृश्य

इस अवसर पर अपने विशेष उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने 'मनुर्भव' की विस्तृत व्याख्या तथा वैश्विक मानव मूल्यों की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए आर्य समाज के दृष्टिकोण को बड़े प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की अनेक घटनाओं का वर्णन करके यह बताया कि बड़े से बड़े प्रलोभन को भी महर्षि दयानन्द ने ठुकराकर वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा की। आर्य समाज के छठें नियम में वर्णित इसके मुख्य उद्देश्य की विस्तृत व्याख्या करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज सम्पूर्ण प्राणी जगत के कल्याण की भावना से कार्य करता है। महर्षि दयानन्द जी ने संसार के सभी मनुष्यों के शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति का दायित्व आर्य समाज को सौंपा है। अतः आर्य समाज की दृष्टि में जन्म के आधार पर स्थापित विषमता, भेदभाव एवं व्यवस्था वेद विरुद्ध है। यह मनुष्यकृत व्यवस्था होने के कारण ईश्वरीय न्याय का उल्लंघन करती है। अतः आर्य समाज जन्मना जाति, आर्थिक विषमता, लैंगिक मतभेद को गलत मानता है। स्वामी जी ने आह्वान किया कि हमें सर्वप्रथम मनुष्य बनने की कोशिश करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द जी द्वारा मनुष्य की परिभाषा के अनुसार ''मनुष्य उसी को कहना, जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख, हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित ही क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण करे और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान, गुणवान भी क्यों न हो, तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारी के बल की उन्नति सर्वदा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले जाये परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी न होवे।''

स्वामी जी के व्याख्यान से पहले श्री राम सिंह आर्य ने उनका परिचय देकर जोधपुर पधारने पर धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर नव–निर्वाचित विधायक श्रीमती मनीषा पंवार ने समस्त जनसमूह का उन्हें दिये गये सहयोग, आशीर्वाद एवं स्वागत के लिए हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि मैं आज भी आप सभी की बेटी और एक समाजसेविका के रूप में अपने आपको आपके बीच में गौरवान्वित महसूस करती हूँ और यह विश्वास दिलाती हूँ कि जो दायित्व आप लोगों ने मुझे सौंपा है उसे मैं पूरी ईमानदारी से आप लोगों के सहयोग से निभाऊँगी और हमेशा आप लोगों के बीच रहती हुई कार्य करती रहूँगी।

इस समारोह में श्री नारायण सिंह आर्य उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री दलपत सिंह आर्य संरक्षक आर्य वीरदल जालौर, श्री धनराज सिंह आर्य प्रधान आर्य वीरदल पाली, श्री हरदेव सिंह आर्य संरक्षक आर्य वीरदल शिवगंज, स्वामी वेदान्तवेश, श्री जय प्रकाश राखेचा पार्षद्, श्री चम्पालाल खत्री पार्षद् सांचौर, श्री भरत मेघवाल पार्षद् जालौर, श्री ओम प्रकाश खत्री, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री बिरजानन्द एडवोकेट महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, श्री हरि सिंह आर्य प्रधान आर्य वीरदल जोधपुर, श्री भंवर लाल आर्य मुख्याधिष्ठाता आर्य वीरदल राजस्थान मंच पर विराजमान थे। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व कुलपति प्रो. भंवर सिंह जी राज पुरोहित भी अपना आशीर्वाद देने के लिए कार्यक्रम में पधारे। श्री उम्मेद सिंह आर्य ने मंच संचालन किया। उनके अतिरिक्त श्री लक्ष्मण सिंह आर्य, श्री किशोर आर्य, श्री जितेन्द्र आर्य, श्री विकास, श्री महेश आर्य, श्री सौभाग सिंह चौहान, श्री गजेन्द्र सिंह आर्य आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष योगदान दिया। समारोह में यज्ञ का विशेष आयोजन किया गया जिसे श्री विक्रम सिंह आर्य ने सम्पन्न कराया।

जोधपुर शहर आगमन पर स्वामी आर्यवेश जी तथा उनकी टीम का स्वागत करते हुए सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री राम सिंह आर्य तथा अन्य पदाधिकारी

आर्य समाज शिवगंज आगमन पर स्वामी आर्यवेश जी तथा उनकी टीम का स्वागत करते हुए आर्य वीरदल के संरक्षक श्री हरदेव आर्य तथा अन्य पदाधिकारी

आर्य समाज भीनमाल के कार्यकर्ताओं के बीच स्वामी आर्यवेश जी

प्रजापति छात्रावास में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी कार्यकर्ताओं के बीच तथा उनको सम्बोधित करते हुए

शकरपुर की निगम पार्षद् श्रीमती नीतू सिंह के कार्यालय में विशेष यज्ञ कर मनाया गया मकर संक्रांति पर्व

दिनांक 14 जनवरी, 2019 को आर्य समाज शकरपुर के तत्वावधान में शकरपुर क्षेत्र की निगम पार्षद् श्रीमती नीतू सिंह के कार्यालय में मकर संक्रांति पर्व विशेष यज्ञ के साथ मनाया गया। विशेष यज्ञ के ब्रह्मा पं. बृजपाल शास्त्री रहे तथा मुख्य यजमान के आसन पर पार्षद् श्रीमती नीतू सिंह विराजमान हुई। इस अवसर पर आर्य समाज शकरपुर के मंत्री श्री पतराम त्यागी ने मकर संक्रांति पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला।

यज्ञ के पश्चात् प्रसाद वितरण श्रीमती नीतू सिंह द्वारा किया गया। इस यज्ञ में आर्य समाज शकरपुर के पदाधिकारी आर.डब्ल्यू.ए. ब्लाक के पदाधिकारियों सहित सैकड़ों व्यक्ति उपस्थित थे। मुख्यरूप से आर.डब्ल्यू.ए. के प्रधान श्री आर. के. शर्मा, चेयरमैन श्री रंजीत सिंह, कार्यालय सचिव श्री एस.एल. मिश्रा, कार्यकारिणी सदस्य श्री अनिल अग्रवाल, श्री रविदत्त त्यागी, उपाध्याय ब्लाक के महासचिव श्री अशोक शर्मा, श्री अजय शर्मा, श्री वेद प्रकाश वानप्रस्थी, श्री रमेश गोयल, आर्य समाज शकरपुर के कोषाध्यक्ष श्री राकेश शर्मा, श्री नन्द कुमार वर्मा, श्री अनुज त्यागी, श्री दीपक त्यागी, श्री रामेश्वर त्यागी तथा क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्तियों ने यज्ञ में अत्यन्त श्रद्धा के साथ आहुति अर्पित की। कार्यक्रम का संयोजन तथा संचालन आर्य समाज शकरपुर के यशस्वी मंत्री श्री पतराम त्यागी ने किया।

बलमुपास्व

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं
आर्य राष्ट्र के शंखनाद राजधर्म 'मासिक' पत्रिका की
स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर भव्य

स्वर्ण जयन्ती समारोह

दिनांक : 9, 10 मार्च, 2019 (शनिवार, रविवार)

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

कार्यक्रम के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

1. सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के किसी कार्यक्रम का चित्र अथवा वीडियो आपके पास हो तो उसे आप हमें उपलब्ध कराने की कृपा करें। मूल कापी आपको लौटा दी जायेगी।
2. 'राजधर्म' पत्रिका के 1968 से सन् 2000 तक के जो भी अंक आपके पास हों वह हमें आप उपलब्ध कराकर कृतार्थ करें।
3. स्वामी इन्द्रवेश जी का कोई चित्र या आडियो–वीडियो कैसेट आपके पास हो तो वह आप हमें उपलब्ध कराकर योगदान दे सकते हैं।
4. कार्यक्रम में अधिक से अधिक आर्यजनों एवं आर्य युवकों को आने के लिए प्रेरित करके उन्हें अपने संयोजन में लाने की व्यवस्था करके आप कार्यक्रम की सफलता में योगदान दे सकते हैं।
5. आप अभी से 9–10 मार्च, 2019 को स्वर्ण जयन्ती समारोह में आने की तैयारी प्रारम्भ कर दें और अपनी आर्य समाज एवं आर्य युवक परिषद् का बैनर तैयार करवा लें।
6. समारोह में आने वाले सभी युवक–युवतियाँ एवं स्त्री–पुरुष केसरिया पगड़ी व स्त्रियाँ केसरिया दुपट्टा पहनकर आवें।
7. अपने वाहनों पर ओ३म् ध्वज का प्रचण्ड प्रदर्शन अवश्य करते हुए पधारें।
8. इस विशाल कार्यक्रम के सफल आयोजन एवं सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए आप अधिक से अधिक धनराशि एकत्रित करके अथवा स्वयं अपनी ओर से 'स्वामी इन्द्रवेश फाऊंडेशन' के नाम भिजवायें या लेते आवें। आपके सहयोग से ही यह कार्यक्रम सफल हो सकेगा।
9. सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् आर्य समाज का सशक्त युवा संगठन है इसे और अधिक सक्रिय एवं सशक्त बनाने के लिए इस समारोह में भावी कार्यक्रमों की घोषणा की जायेगी। आप उन निष्ठावान, कर्मठ कार्यकर्ताओं को तैयार करें जो परिषद् के साथ जुड़कर एक समर्पित कार्यकर्ता के रूप में कार्य करने का संकल्प लें। कम से कम 50 कार्यकर्ता इस समारोह में संकल्प लें ऐसी हमें अपेक्षा है।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेशन, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, हरियाणा

9416630916, 9354840454, 9468165946

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

जहां नहीं होता कभी विश्राम ॥ओ३म्॥ आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

वायु प्रदुषण, पर्यावरण शुद्धि व राष्ट्र की सुख समृद्धि हेतु

डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में
स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के सान्निध्य में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 1, 2, 3 फरवरी 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

स्थान : पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली-110026 (मेट्रो स्टेशन, पंजाबी बाग)

राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा : शनिवार, 2 फरवरी 2019, प्रात: 10.30 बजे से

रूट: पंजाबी बाग स्टेडियम से शुभारम्भ वाया वेस्ट एवेन्यू, सेन्ट्रल मार्किट, आर्य समाज, गुरु नानक स्कूल, लाल बत्ती से बाएं, नॉर्थ एवेन्यू, क्लब रोड, मादीपुर चौक से दाएं, मादीपुर गांव, अरिहन्त नगर, वेस्ट एवेन्यू होकर वापिस स्टेडियम पर समापन।

संयोजक–लॉयन प्रमोद सपरा, वीरेश बुग्गा, डॉ. दीपक सचदेवा, डॉ. विपिन खेड़ा, विश्वनाथ आर्य, सन्तोष शास्त्री, वीरेश आर्य, राकेश भटनागर, योगेन्द्र शास्त्री, प्रवीण आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, डॉ. विशाल आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र, के.एल. राणा, ओमवीर सिंह, दिनेश आर्य, के.के. यादव, ईश आर्य, देवदत्त आर्य, विक्रांत चौधरी, विपिन मित्तल, जीवनलाल आर्य, सीमा-रोहित धींगड़ा, के.के सेठी, माधव सिंह, अशोक सरदाना, डिम्पल-नीरज भंडारी, नरेश विग, सुनील अग्निहोत्री, कस्तूरीलाल मक्कड़, सुरेन्द्र कोछड़, वेदप्रकाश आर्य, डॉ. मुकेश सुधीर

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, राजीव कुमार परम, अरुण बंसल, सुरेन्द्र मानकटाला, महेन्द्र मनचन्दा

शुक्रवार 1 फरवरी, 2019

101 कुण्डीय विराट यज्ञ	:प्रात: 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	:प्रात: 10.45 बजे
आर्य महिला सम्मेलन	:11.00 से 2.00 बजे
आर्य युवा सम्मेलन	:2.15 से 5.00 बजे
व्यायाम शक्ति प्रदर्शन	:5.00 से 6.00 बजे
भव्य संगीत संध्या	:रात्रि 7.00 से 9.00 बजे

शनिवार 2 फरवरी, 2019

यज्ञ	: प्रात: 8.30 से 9.30
ध्वजारोहण	: प्रात: 10.00 बजे
राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा	: प्रात: 10.30 से 1.30
राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	: दोपहर 2.30 से 5.30
सामुहिक सन्ध्या	: सायं 5.30 से 6.00
वेद संस्कृत रक्षा सम्मेलन	: रात्रि 7.00 से 9.00

रविवार 3 फरवरी, 2019

151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रात: 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	: प्रात: 11.00 बजे
राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	: 11.30 से 2.30
शिक्षा संस्कृति बचाओ सम्मेलन	: 2.30 से 4.30
कार्यकर्ता सम्मान समारोह	: सायं 4.30 से 5.00 बजे
धन्यवाद एवम् शांतिपाठ समापन	: सायं 5.30 बजे

दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या व समय के बारे में व यज्ञमान बनने के इच्छुक 15 जनवरी 2019 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास का उचित प्रबंध किया जा सके। **सम्पर्क :** देवेन्द्र भगत-9958889970, दुर्गेश आर्य-9868664800, राजीव आर्य-9968079062 सुनील सहगल-9968074213, सौरभ गुप्ता-9971467978, अरुण आर्य-9818530543, वरुण आर्य-8586801154, विनोद कालरा-9899444347

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा "केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली" के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

अनिल आर्य	यशोवीर आर्य	आनन्द चौहान	डॉ. रिखबचन्द जैन	सुभाष आर्य	सुरेन्द्र कोहली
राष्ट्रीय अध्यक्ष	रामकुमार सिंह	ठाकुर विक्रम सिंह	डॉ. लाजपत राय आर्य	कैलाश सांकला	नरेन्द्र आर्य सुमन
महेन्द्र भाई	सुभाष बब्बर	मायाप्रकाश त्यागी	योगराज अरोड़ा	रवि चड्डा	गायत्री मीना
राष्ट्रीय महामंत्री	स्वतन्त्र कुकरेजा	चन्द्रमोहन खन्ना	रमेश कुमारी भारद्वाज	राजेन्द्र लाम्बा	बलदेव जिन्दल
सुरेश आर्य	आनन्द प्रकाश आर्य	प्रदीप तायल	धर्मपाल कुकरेजा	बलदेव सचदेवा	डॉ. गजराज सिंह आर्य
सुशील आर्य	राम कृष्ण शास्त्री	प्रवीन तायल	प्रेम कुमार सचदेवा	सत्यानन्द आर्य	ब्रह्मप्रकाश मान
राष्ट्रीय मंत्री	कृष्ण प्रसाद कौटिल्य	अमित मान	प्रिं. अंजु महरोत्रा	आर.पी. सूरी	रविदेव गुप्ता
धर्मपाल आर्य	भानुप्रताप वेदालंकार	विकास गोगिया	सत्यवीर चौधरी	सुभाष मित्तल	ए.के. धवन
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	स्वागतमंत्री		

स्वागत समिति: आ. प्रेमपाल शास्त्री, ओम सपरा, धर्मपाल परमार, अंजु जावा, नरेन्द्र कस्तूरिया, देवमित्र आर्य, उर्मिला आर्या, अर्चना पुष्पकरणा, जितेन्द्र डावर, गवेन्द्र शास्त्री, प्रवीण भाटिया, राजरानी अग्रवाल, विवेक-हीरालाल चावला, डॉ. विनोद क्षेत्रपाल, अमरनाथ बत्रा, भोपाल सिंह आर्य, अरविन्द आर्य, विजय भास्कर, विजयारानी शर्मा, अमीरचन्द रखेजा, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, राजेन्द्र दुर्गा, राजेन्द्र निझावन, ओमप्रकाश यजुर्वेदी, चतरसिंह नागर, सुरेन्द्र शास्त्री, रामलुभाया महाजन, आदर्श आहूजा, प्रदीप गोगिया, सुशील बाली, डॉ. धर्मवीर आर्य, ओमप्रकाश गुप्ता, रणसिंह राणा, अशोक आर्य, बृजेश-पीतम गुप्ता, रमेश गाडी, सरोज-जवाहर भाटिया, मनोहरलाल चावला, हरिचन्द स्नेही

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9213402628, 9871581398, 9013137070

E-mail: aryayouth@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।